18/3/1966 शुक्रवार प्रातः क्लास

रिकॉर्ड :– भोलेनाथ से निराला.....

(तुम बच्चे) हो ईश्वरीय सम्प्रदाय। आगे थे आसुरी सम्प्रदाय। वो जो आसुरी सम्प्रदाय हैं उनको ये मालूम नहीं है कि भोलानाथ भी किसको कहा जाता है; क्योंकि उनको ये भेद पता नहीं है कि शिव और शंकर अलग हैं। वो देवता है, वो बाप है, परमात्मा है– यह भी इनको पता नहीं। बिचारे कुछ जानते नहीं। अब तुम बच्चे हो ईश्वरीय सम्प्रदाय। जैसे बाबा समझाते हैं कि ईश्वर की फैमिली हो। तुम है ईश्वर की फैमिली तो वो है आसुरी फैमिली यानी रावण की फैमिली। देखो, कितना फर्क है! अभी ईश्वर की फैमिली ईश्वर द्वारा सीख रही है कि एक/दो में प्यार कैसे चाहिए; क्योंकि एक/दो में प्यार तो फिर देवताओं में होता है। यहाँ ब्राह्मण कुल में इतना प्यार नहीं है, जब तलक ये पिछाड़ी तक पुरुषार्थ कर देखें। तो भी देखा जाता है कि पूरा प्यार न होने के कारण इतना ऊँचा पद वहाँ नहीं पाते हैं। भले वहाँ एक धर्म होने के कारण कोई भी आपस में झगड़ा–वगड़ा नहीं होता है। इसको ही कहा जाता है एक राज्य। वहाँ आपस में सब मिले हुए हैं, झगड़ा–वगड़ा नहीं होता है; क्योंकि फिर राजाई राज्य हो जाता है। यहाँ तो राजाई राज्य नहीं है। यहाँ तो ब्राह्मणों में भी कुछ–न–कुछ झगड़े लगते रहते हैं, जब तलक ये सभी पास हों और जो झगड़े करने वाले हैं वो भी सभी सज़ाएँ खा करके पास हों। फिर भले सज़ाएँ खाएँगे तो कम पद में जाएँगे ना। वो वहाँ जा करके फिर एक धर्म की जब होती है देवी–देवताओं की तब वहाँ शांत रहती है। ये बरोबर है कि उस तरफ में है आसुरी सम्प्रदाय वा आसुरी फैमिली टाइप। यहाँ है ईश्वरीय फैमिली टाइप। फिर भी ये जो ईश्वरीय फैमिली टाइप है वो भविष्य के लिए दैवी गुण धारण कर रही है। इसलिए बाप बैठ करके बच्चों को भविष्य के लिए शांत बनाते हैं यानी सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी बनाते हैं। सब तो नहीं बनते हैं ना। जो बनते हैं श्रीमत पर वो तो विजयमाला के दाने बन जाते हैं। जो न बनते हैं वो फिर प्रजा में आ जाते हैं; परन्तु वहाँ तो फिर गवर्मेन्ट का लॉ एण्ड ऑर्डर रहता है ना। यहाँ ये गवर्मेन्ट तो नहीं है ना। वहाँ गवर्मेन्ट है। ऐसे कहा जाता है ना– डीटी गवर्मेन्ट, भई 100 परसेन्ट प्युरिटी, पीस एण्ड प्रॉसपेरिटी। तो उस गवर्मेन्ट में शांति भी थी। ऐसे नहीं कहेंगे कि ये कोई गवर्मेन्ट है, इस ब्राह्मण कुल में कोई प्युरिटी, पीस एण्ड प्रॉसपेरिटी है। ये देवी–देवता गुण धारण कर रहे हैं। पीछे कोई अच्छी तरह से धारण कर औरों को धारण कराते हैं और कोई अच्छी तरह से न कर, फिर दूसरे को भी धारण नहीं करा सकते हैं। तो यहाँ कहें कि ये ब्राह्मण कुल में, ईश्वरीय कुल में, ईश्वरीय सम्प्रदाय में आपस में मेल हो, ये नहीं हो सकता है। देखो, पुरुषार्थी हैं ना। यहाँ पुरुषार्थ करते रहते हैं। यहाँ अंत तक सबकी अवस्था तो एक जैसी नहीं हो सकती है ना। सभी कर्मातीत तो बन नहीं सकते हैं। इसलिए फिर वो सज़ाएँ खा करके, पदभ्रष्ट हो करके, फिर कम पद जाकर पाते हैं। यहाँ भी कोई ब्राह्मणों में भी वो शांति जिसको खीर खण्ड कहा जाए, यहाँ नहीं होती है। देखो, बहुत ही समाचार आते हैं कि बरोबर आपस में लूण–पानी हो रहते हैं। ऐसे बहुत सेन्टर्स हैं। मिसला ये कानपुर है, जयपुर है, सोनपत है। देखो, बाबा सेन्टर्स का नाम भी लेते हैं ना। वहाँ आपस में लूण–पानी बहुत हैं; क्योंकि कोई का स्वभाव कैसा, कोई का स्वभाव कैसा। अभी वो दैवी गुण धारण करने वाले नहीं बने हैं। तो फिर आपस में खिटपिट करते रहते हैं। तो बाप बताते हैं ना– फलाने–2 जगह में, ऐसे बहुत जगह हैं जहाँ आपस में लूण–पानी होने के कारण, ईश्वरीय सर्विस में फिर वो जो लूण–पानी होने वाले होते हैं वो बाधा डालते हैं। जिसका नतीजा क्या होता है? वो बिचारे इतना ऊँच पद पा नहीं सकते हैं। नहीं तो वास्तव में ये बड़ी फैमिली है। ये ईश्वर की फैमिली है। वो तो और ही एक ग्रेड कम होती है। यहाँ पुरुषार्थ करते हैं; क्योंकि यहाँ फिर माया भी है ना। वो एक तरफ में ये पुरुषार्थ करते हैं खीर पानी होने का, खीर खण्ड होने का, दूसरे तरफ माया इनको फिर लूण–पानी बनाय देती है। फिर लूण–पानी बनाने के कारण सर्विस डिस्टर्ब होती है। जो लूण–पानी होते हैं फिर देखो वो इतना ऊँच पद नहीं पा

सकते हैं। उनको धारणा नहीं होती है, औरों को धारणा नहीं करा सकते हैं। लूण–पानी होने (के) कारण और ही बाप की निंदा कराते हैं। तो वो पद भी ऊँचा नहीं पा सकते हैं। ये बाप बैठ करके समझाते हैं। इस समय में वास्तव में तुम हो ईश्वरीय टाइप फैमिली। रहते भी हो ईश्वर के साथ। इकट्ठे भी रहते हो। भले कोई दूसरे–2 गाँव में रहते हैं, तो भी यहाँ इकट्ठे तो हैं ना; क्योंकि ईश्वर भी तो यहाँ आया हुआ है ना; क्योंकि उनकी भी तो...। बरोबर भारत में आते तो हैं ना ज़रूर। अभी बिचारे वो आसुरी सम्प्रदाय जानते नहीं हैं कि बरोबर शिव आते हैं, कब आते हैं, क्या आकर करते हैं। ये इनको मालूम नहीं है। ये अभी तुमको बाप द्वारा परिचय मालूम हुआ; क्योंकि परिचय देने वाला; क्योंकि पिछाड़ी में तो कहते हैं ना कि हमको ईश्वर, न रचता, न रचना का परिचय है। न ईश्वर का परिचय है, न उसकी इस रचना के आदि,मध्य,अंत का परिचय है। वो तो ठीक है, अभी भी नहीं है। तुम्हारे को है, बाकी और सारी दुनिया को ये मालूम नहीं है कि रचता कौन है और ये जो रचना है उसका ये चक्कर कैसे फिरता है। अभी कौन सा समय है, ये भी इनको कुछ पता नहीं है अर्थात् घोर अंधियारे में हैं। घोर अंधियारे में क्यों बने हैं? क्योंकि मनुष्यों के बनाए हुए भक्तिमार्ग के ये शास्त्र पढ़ करके देखो फिर दुर्गति को पाए हुए हैं; इसलिए घोर अंधियारे में हैं, कुछ भी उनको पता नहीं रहता है। तुम बच्चों को अभी रचता ने आ करके रचना के आदि,मध्य,अंत का समाचार सुनाया है और साथ–2 तुमको योगबल से ये पवित्र भी बना रहे हैं; क्योंकि पतित हो तो पवित्र कैसे बनो? सो तो बाप बैठकर समझाते हैं कि हे सालिग्रामों! मेरे को याद करने से यानी शिवबाबा को याद करने से। अब ये कौन कहते हैं? शिवबाबा कहते हैं अपने बच्चों को। शिवबाबा कहे– हे सालिग्रामों, अभी तुम पावन बनने के लिए चाहते आते हो, भक्तिमार्ग में पुकारते आते हो तो अभी आया हूँ। अभी सबको तो एक साथ नहीं बना सकते हैं ना, न पढ़ाय सकते हैं। इसलिए ये इतने सेन्टर्स होते रहते हैं; क्योंकि शिवबाबा आते ही हैं भारत को फिर से शिवालय बनाने; क्योंकि रावण ने इस समय भारत को वैश्यालय बना लिया है; क्योंकि खुद ही गाते हैं ना कि हम पतित हैं। पतित वालों को वैश्यालय भी कहेंगे; क्योंकि विषियस हैं। जब विषियस कहा जाता है तो उसको कहा जाता है वैश्यालय। सो तो है ज़रूर। बरोबर यहाँ विकारी हैं और बरोबर ये जो भारत पहले सतयुग में निर्विकारी था। ये तो जानते हो, जो निर्विकारी थे, उनकी विकारी पूजा करते हैं, गायन करते हैं। सो भी तो भारत में बिल्कुल मशहूर है। उनको ये मालूम नहीं है कि वो जो निर्विकारी है सो ही विकारी बनते हैं। ये भी कोई को पता नहीं है। तो बाप बैठकर पता बताते हैं क्योंकि वही निर्विकारी पूज्य बनते हैं, वही पुजारी , विकारी बन जाते हैं। जब पूज्य हैं, निर्विकारी हैं तो पूज्य–निर्विकारी कहाँ से बने? तो फिर बरोबर है ना कि यहाँ बुलाते रहते हैं– हे पतित–पावन आओ, आ करके फिर पावन बनाओ यानी निर्विकारी बनाओ। बाप भी कहते हैं– बच्चे, ये अंतिम जन्म अगर तुम निर्विकारी हो करके रहे और मुझे याद किया तो विकार के कारण तुम्हारे ऊपर जो पापों का बोझा है वो भी कट जाएगा, फिर तुम जो तमोप्रधान बन गए हो सो सतोप्रधान बन जाएँगे। ये बाप आ करके किसको समझाते हैं? अपनी फैमिली को; क्योंकि ये फैमिली टाइप है या इसको ईश्वरीय फैमिली टाइप कहा जाता है। फिर सतयुग को कहेंगे दैवी फैमिली टाइप। समझा ना। पीछे कहेंगे क्षत्रिय फैमिली टाइप चंद्रवंशी, फिर...वैश्यवंशी। ये सभी टाइप्स होते हैं ना। इस समय में तुम वास्तव में हो ईश्वरीय फैमिली लाइफ। ये है सबसे ऊँच ; क्योंकि यहाँ तुम ईश्वरीय फैमिली लाइफ के बाद फिर दैवी फैमिली लाइफ में 21 जन्म पास करते हो। इस ईश्वरीय फैमिली लाइफ में सिर्फ ये अंतिम जन्म, एक जन्म पास करते हो। इसलिए कहते हैं कि ये तुम्हारा अंतिम जन्म है। इसलिए तुमको भविष्य के लिए देवी–देवता धर्म के लिए फिर सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी बनना है। क्यों? कि तुम थे, पीछे नहीं बने। जब तुम थे, तब राज्य करते थे, फिर जब पुजारी बने तो अपन को विकारी और उनको फिर सर्वगुण सम्पन्न...। अपन को मैं निर्गुण हारे में को गुण नाहीं। तुम वही थे; परन्तु देखो, ये बात किसको भी पता नहीं है। तो ये सब बातें तुमको

समझानी पड़े ना कि भगवान है। तो वास्तव में जो भगवान है, हम उनके बच्चे हैं तो फैमिली है; क्योंकि गाया जाता है ना– तुम मात–पिता, हम बालक तेरे। किसको कहते हैं? हे परमपिता परमात्मा! उनको कहते हैं। हम बालक तेरे, तो फैमिली हो गई ना। गाते तो हैं ना। भक्तिमार्ग में गाते हैं। कोई सतयुग–त्रेता में नहीं गाते हैं। भक्तिमार्ग में याद करते हैं। हे भगवन! तुम मात–पिता, हम बालक तेरे, फिर तुम्हरी जब कृपा होती है तो सुख घनेरे मिलते हैं; क्योंकि हैं तो तुम्हारे हम। बाप फिर रिस्पॉण्ड करते हैं कि बरोबर तुम हमारी फैमिली बेशक हो। सतयुग में मैंने तुमको सुख घनेरे दिया था; परन्तु ड्रामा प्लैन के अनुसार फिर रावण राज्य भी तो आना है। उनके आने के बाद तुम फिर दुःख में आते हो भक्तिमार्ग में तो फिर पुकारते हो कि हे बाबा, हे मात–पिता फिर आओ। तो देखो, है तो फैमिली ना। इस समय में एक्युरेट फैमिली हो। फिर तुमको अभी वो सुख देते हैं, भविष्य 21 जन्म के लिए वर्सा देते हैं, जो फिर वहाँ तो वही दैवी फैमिली कहेंगे। वहाँ ईश्वरीय फैमिली नहीं कहेंगे; क्योंकि यहाँ ईश्वरीय फैमिली। यहाँ आसुरी फैमिली भी है ना। तो आसुरी फैमिली से ईश्वरीय फैमिली, ईश्वरीय फैमिली से फिर दैवी फैमिली। ये भी टाइप्स होते हैं ना। किस्म–2 के ये फैमिली टाइप्स हैं। जैसे क्रिश्चियन की क्रिश्चियन फैमिली। क्रिश्चियन टाइप फैमिली, बौद्धी टाइप फैमिली, ऐसे है ना। वास्तव में ये ईश्वरीय फैमिली तो है, सब उनको पुकारते हैं; परन्तु इस समय में जबकि तुम ब्राह्मण हो तब तुम कहते हो कि हम हैं ईश्वरीय टाइप फैमिली ; क्योंकि बापडाडे से वर्सा मिल रहा है। समझा ना ; क्योंकि ये जो डाडे से वर्सा मिलता है सो फिर 21 जन्म दैवी फैमिली में कायम रहता है। ईश्वरीय फैमिली में दैवी फैमिली के लिए, 21 जन्म के लिए तुमको सतयुग–त्रेता में इनहेरीटेन्स मिलता है। तो देखो, ये तो दैवी फैमिली बड़ी हो गई ना; क्योंकि वो दैवी फैमिली सो सतयुग,त्रेता,द्वापर,कलहयुग तक चलती है; परन्तु पवित्र न होने कारण ये ड्रामा के प्लैन अनुसार; क्योंकि वो रावण राज्य आता है ना, तो फिर ये हम दैवी फैमिली हैं, वो भूल जाते हैं; क्योंकि वाममार्ग में चले जाते हैं। तो फिर जैसे आसुरी फैमिली हो जाती है। ये तो समझाना पड़े ना। तो इस समय में कहा जाता है कि तुम बच्चे ईश्वरीय फैमिली हो। तुम भविष्य 21 जन्म के लिए दैव पद पाते हो। पीछे आसुरी फैमिली होने के कारण 64 जन्म फिर आसुरी पद। देखो, दुःखी होते हो। ये सीढ़ियाँ नीचे गिरते–2 आते हो। ये अभी तुम बच्चों की बुद्धि में तो अच्छी तरह से बिठाया जाता है ना समझाने के लिए। किसको भी समझा सकते हो कि तुम असुल तो आदि सनातन देवी–देवता धर्म के हो ना। तुमको आदि सनातन देवी–देवता धर्म का मालिक तो ज़रूर जिसने स्वर्ग रचा, उसने किया होगा ना। तो ज़रूर सतयुग के आगे कलहयुग। कलहयुग और सतयुग के संगम पर ये मनुष्य को देवता बनाया है। देवताएँ सतयुग में होते हैं, मनुष्य ज़रूर कलहयुग में होंगे। तो कलहयुग–सतयुग के बीच में संगमयुग गाया जाता है। उसमें ही मनुष्य को, देखो तुम मनुष्य हो, तुमको बैठ करके दैवी धर्म में ले आते हैं। पहले ब्राह्मण धर्म में, पीछे दैवी धर्म में ले आते हैं। तो अभी ये समझाना होता है ना कि इसने लक्ष्मी–नारायण ने ये दैवी राज्य किससे लिया। तो दैवी राज्य तो आगे था आसुरी राज्य। फिर दैवी राज्य कब किया? तब फिर तुम समझा सकते हो कि संगमयुगे, जो बाप कहते हैं मैं कल्प–3 के संगमयुगे आ करके फिर ये आदि सनातन...। पहले ब्राह्मण धर्म ब्रह्मा द्वारा, फिर इस ब्राह्मणों को आदि सनातन देवी–देवता धर्म में ले आते हो। दोनों– देवी–देवता धर्म और क्षत्रिय धर्म में। ये बच्चों को अभी अच्छी तरह से समझना तो चाहिए ना और फिर औरों को भी समझाने की युक्तियाँ चाहिए; क्योंकि हैं बेशक सभी भगवान की फैमिली; क्योंकि मात–पिता को, ओ फादर! ऐसे भी तो कहते हैं ना। ओ लिबरेटर! तो ऐसे याद करते हैं उनको। यूँ है फैमिली सभी ; क्योंकि सभी कहते हैं बाप है भगवान। तो हम फैमिली हो गई; परन्तु बाप है, जानते नहीं हैं। इसलिए फिर बाप को न जानना ; इस समय के आसुरी मनुष्य को, जो कहते हैं– हे मात–पिता, उनको जानते नहीं हैं। शिवजयन्ती मानते हैं, जानते नहीं हैं कि यह पिता है हमारा सबका। ज़रूर पिता है, आया होगा ज़रूर भारत में और आते भी हैं कल्प के

संगमयुग जबकि घोर अंधियारी है। तब आते हैं सोझरा करने। ज़रूर सोझरा माना स्वर्ग स्थापन करने। तो देखो, ये स्वर्ग स्थापन कर रहे हैं और तुम बच्चे बैठकर पढ़ते हो, दैवीगुण धारण कर रहे हो। तो भारतवासियों को मालूम होना चाहिए ना।... शिवजयन्ती मानी जाती है, उसके बाद क्या होगा? अरे भई, शिवजयन्ती के बाद तो ज़रूर सतयुग जयन्ती होगी और ज़रूर लक्ष्मी–नारायण जयन्ती भी होगी यानी दैवी जयंती, दैवी राज्य स्वराज्य की जयन्ती होगी; क्योंकि वो स्वर्ग का हैविनली गॉड फादर है तो हैविन में तो राज्य स्थापन करने नहीं आएँगे। ज़रूर हेल में आएँगे। तो हेल एण्ड हैविन के बीच में आते हैं। बोलते हैं मैं हेल एण्ड हैविन के बीच में...। उसको कहा जाता है कल्प का संगमयुग। तो मैं आता हूँ ज़रूर। तो देखो, गाया भी जाता है कि बरोबर शिवरात्रि। तो रात्रि में मैं आता हूँ जबकि अंधेरी है। अब ये बात सिर्फ तुम बच्चे समझ सकते हो और धारणा हो सकती है औरों को धारणा कराने के लिए। जो धारणा करते हैं अच्छी तरह से, धारणा कराते हैं अच्छी तरह से, दिल पर भी तो वही चढ़ते होंगे ना, जो सर्विस करते हैं। मंसा,वाचा,कर्मणा तीन प्रकार की सर्विस होती है। फिर जैसे–2 सर्विस इतना–2 दिल पर चढ़ेंगे। सर्विस तो सब करेंगे ही ज़रूर। कुछ–न–कुछ करते हैं ना। कोई सफाई करेंगे, कोई भण्डारा चढ़ाएँगे, कोई क्या काम, कोई ऑलराउण्ड वर्कर्स होते हैं, सब करते हैं। कोई आवे तो उनको ज्ञान भी समझाते हैं, कोई आवे तो रोटी भी पका लेते हैं, कोई आवे तो पानी भी देते हैं, कोई आवे तो कुछ स्थूल सर्विस भी कर देते हैं। तो सूक्ष्म भी, मूल भी यानी थॉट,वर्ड,डीड। इसको कहा जाता है मंसा, वाचा, कर्मणा....। उसको कहा जाता है सभी सर्विस में ऑलराउण्डर। जो भी सर्विस सामने आती है तो सभी सर्विस सीखनी चाहिए; क्योंकि भोजन भी बनाना सीखना चाहिए, फिर उसमें तो बर्तन भी मांजना पड़े, सब कुछ करना पड़े। इसको ही कहा जाता है स्थूल। अपने लिए भी और फिर दूसरे के लिए भी। ये भी सर्विस है ना। ...सर्विस में जब ईश्वर है तो ईश्वर की याद में सब सर्विस करनी पड़े। ईश्वर की याद तो फर्स्ट। वो जब उसको याद करते रहें तब विकर्म विनाश हो। तभी बाप आ करके समझाते हैं– मैं तुम बच्चों को कर्म,अकर्म,विकर्म का ज्ञान सुनाता हूँ कि इस समय में जब आसुरी सम्प्रदाय है तो कर्म विकर्म हो जाते हैं। जब सतयुग होता है तो कर्म अकर्म हो जाते हैं। .....वो रावण राज्य तो है नहीं और यहाँ का वर्सा मिला हुआ है। वहाँ तुम सभी आपस में रहते ही हो सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पन्न, सम्पूर्ण निर्विकारी। सर्वगुण सम्पन्न यथा राजा–रानी तथा प्रजा होते हैं। उसमें कोई भी एक/दो को दुःख दे नहीं सकते हैं; परन्तु भक्तिमार्ग वाले शास्त्रों में वो सभी दुःख ही दुःख दिखलाय दिया है। इसलिए बाप आकर समझाते हैं कि देखो, उन शास्त्रवादियों ने, जो शास्त्र ड्रामा के अनुसार फिर बनते हैं... परन्तु ये तो समझाया गया है ना– ये शास्त्र बनते ही हैं भक्तिमार्ग के लिए, जिससे फिर सीढ़ी उतरनी पड़ती है। बरोबर देखा जाता है कि जब वाममार्ग में जाते हैं तो फिर सीढ़ी उतरनी पड़ती है; क्योंकि 84 जन्म तो लेना ही पड़ता है। ज़रूर उतरते हैं तो उतरती कला ही कहा जाता है। इस समय में कहा जाता है चढ़ती कला। तो सबकी चढ़ती कला होती है ना। देखो, सबकी चढ़ती कला। इस समय में सबकी उतरती कला। बरोबर इस समय में सभी हैं ही नर्कवासी, तो ज़रूर उतरती कला हो पड़ी और फिर जब चढ़ती कला है तो सब जाते हैं स्वर्ग में और शांतिधाम में। देखो, सबकी चढ़ती कला हुई ना। सबकी चढ़ती कला माना सबको दुःख से छुड़ाय लेते हैं। इसलिए बाप को लिबरेटर भी कहते हैं। अभी तुमको तो यही नशा है ना कि हम इस समय में ईश्वरीय फैमिली टाइप के हैं, पीछे जा करके हम दैवी टाइप के बन करके सुख देखेंगे; क्योंकि यहाँ तुम पुरुषार्थ कर रहे हो। यहाँ तुमको ये नशा है कि हम बाप से वर्सा ले रहे हैं, लायक बन रहे हैं। लायक किसको कहा जाता है? जो औरों को भी राजाई पद पाने के लिए लायक बनाते हैं। पीछे कोई राजाई पद पावे, कोई ये पावे। ये तो बाप ने समझाया है कि पढ़ने वाले तो बहुत ही आएँगे, फिर ऐसे नहीं कि सब कोई 84 जन्म लेंगे। नहीं, सब पढ़ने आएँगे। पीछे जो थोड़ा पढ़ेंगे ऐसे थोड़ा–3 तो देरी से आते रहेंगे। देरी से आते रहेंगे तो ज़रूर 84 जन्म सब थोड़े ही

लेंगे। फिर कोई 82,80। जा करके देखो, आधाकल्प तक ये देवी–देवता ही रहते हैं। आधाकल्प तक तो बहुत आते रहेंगे ना। तो वो पीछे आते रहेंगे, उनके लिए थोड़े ही कहेंगे कि 84 जन्म ...। आते रहते हैं, आते रहते हैं, जो बिल्कुल ही लास्ट... में होगा ना, वो आ करके पिछाड़ी में त्रेता के अंत में जन्म लेगा। उनको भी तो कहेंगे ना– भई स्वर्ग में आए। पीछे तो वाममार्ग आ जाता है। पीछे तो शुरू से ले करके उतरना शुरू ही होता है। ये सभी नॉलेज बुद्धि में रखना चाहिए ना। समझाना होता है ना। ये नॉलेज तो कोई समझा ही न सके। इसलिए भारतवासियों को पहले से ही कह देते हैं कि भारतवासी तो पहले आए थे ना। 84 जन्म तो भारतवासियों ने पूरा किया। कैसे किया? इसलिए ये सीढ़ी बनाई हुई है। देखो, ये राजाई। पीछे यथा राजा–रानी तथा प्रजा हम रहते थे। ये सीढ़ी भी समझने की अच्छी है। वो भी सीढ़ी है जैसे, वो जो चक्र है– सतयुग,त्रेता,द्वापर,कलहयुग। इसमें भी सतयुग,त्रेता,द्वापर,कलहयुग– ये भी सीढ़ी है। ये सीढ़ी उतरने की सहज समझ में आती है। वो ड्रामा के रूप में। ये 84 की सीढ़ी कैसे उतरती है, ये भी बड़ी अच्छी समझाने में आती है। वो समझाने के अक्षर भी लिखे हुए हैं, जो बच्चों को समझाने में सहज होवे कि ऐसे भारत, जो बिल्कुल ही सम्पूर्ण था, वो कैसे ऐसे 84 का पूरा करके बिल्कुल ही पतित बन जाता है। फिर आकरके.....ऊँच बनाते हैं। तो जब बाप आते हैं तभी सभी का कल्याण हो जाता है; क्योंकि कल्याणकारी भी कहा जाता है और इस युग को भी कल्याणकारी युग, ऑस्पिशस युग कहा जाता है। बाप को भी कहा जाता है कल्याणकारी बाप। सबका कल्याण करते हैं। देखने में भी आता है। बरोबर बुद्धि कहती है सतयुग में जब इनका राज्य था, सभी का कल्याण ,कोई भी दुःख नहीं। बाकी आत्माएँ सभी ...। तो ये सब बच्चों की बुद्धि में, जो सुनते हो सो धारणा करनी चाहिए ना। धारणा कर औरों को अच्छी तरह से समझाना पड़े; क्योंकि ये समझाना तो है कि वास्तव में हम सब फैमिली टाइप के हैं ज़रूर। ईश्वर की फैमिली है; क्योंकि भगवान तो सबका बाप है। तुम मात–पिता हम बालक तेरे, ऐसे गाया जाता है। सो भी यहाँ गाया जाता है। वहाँ सिर्फ फादर कहा जाता है, मदर एण्ड फादर नहीं कहा जाता है; क्योंकि यहाँ मदर एण्ड फादर आते हैं; क्योंकि यहाँ तुम बच्चों को एडॉप्ट किया जाता है। माँ–बाप मिलते हैं। उन लोगों को माँ–बाप नहीं मिलते हैं; इसलिए फादर को याद करते हैं। जब फादर क्रियेटर है तो ज़रूर मदर होगी। मदर बिगर क्रियेशन कैसे हो सकती है? तो ये बातें उनको मालूम नहीं हैं– ये फादर है, क्रियेटर है, हैविनली फादर है। कैसे हैविन स्थापन करते हैं– वो तो न भारतवासी जानते हैं, न विलायत वासी ही जानते हैं। सो इस समय में तुम जानते हो, तो बरोबर कैसे फादर आ करके...। पीछे गाया तो हुआ है कि ब्रह्मा के तन से स्थापना करते हैं और शंकर से विनाश। स्थापना और विनाश तो होता ही है। नई दुनिया की स्थापना, पुरानी दुनिया का विनाश होगा, तो ज़रूर कहेंगे कि कलहयुग के अंत का, कलहयुग का, पुरानी दुनिया का विनाश, सतयुग नई की स्थापना। तो ज़रूर संगमयुग पर आकर करेंगे। तो देखो, तुम बच्चे संगमयुग पर हो। ईश्वरीय सम्प्रदाय भी हो, फैमिली भी हो और कल्प के संगमयुग पर भी हो और बाप भी कहते हैं मैं कल्प के संगमयुगे आया हुआ हूँ और तुम आ करके फैमिली टाइप बने हो यानी मम्मा–बाबा या मात–पिता को याद करते रहते हो। तो भी बाप कहते हैं मामेकम् याद करो। दो को नहीं याद करना होता है। नहीं, एक को याद करना होता है कि मेरे को तुम याद करने से ; क्योंकि तुम आत्माओं को भी याद करना है परमात्मा को। गाया भी जाता है– आत्माएँ और परमात्मा अलग रहे बहुकाल। अच्छा, फिर कहाँ सुन्दर मेला? ज़रूर यहीं कहेंगे ना; क्योंकि शिवबाबा, परमात्मा यहीं आते हैं। तो इसको कहा जाता है कल्याणकारी सुन्दर मेला जबकि बाप फिर आ करके सबको अपना ... देते हैं– शांति का वा मुक्ति का और जीवनमुक्ति का। उसमें भी कहा जाता है कि सबको जीवनमुक्ति का दान अथवा वर्सा देते हैं; क्योंकि फिर इस जीवनबंध से सब छूट जाते हैं। फिर सभी शांति में, मुक्तिधाम में तो जाएँगे, फिर आएँगे। तो भी पहले–2 ये सतोप्रधान होते हैं। देखो, पहले–2 जब धर्म स्थापक वाले आते हैं तो थोड़े मनुष्य रहते हैं। उसको कम से

कम आधा समय तो चाहिए जो उनकी आदमशुमारी.. बढ़े। जब बहुत बढ़े तब वो राजाई स्थापन करने के लिए पुरुषार्थ करें। तो जब चलकर बढ़े उस समय में तो कोई झगड़ा–मारामारी उनके पास नहीं होगा ना। नहीं, जब बढ़े, आधा हो, सतोप्रधान और सतो से पास हो रजो में आए। इतनी जब उनकी संस्था हो तब फिर वो लड़ाई–झगड़ा करने का शुरू कर देते हैं; क्योंकि फिर उसका भी उतरना होता है। थोड़ा–2 उतरते तो हैं; परन्तु पीछे उतरना होता है। तो पहले उनके लिए देखो सुख है और यहाँ पहले–2 तुमको सुख है, पीछे देखो दुःख है पिछाड़ी में। तो देखो, अभी वो सभी फिर भी कुछ ठीक है। ये तो एकदम दुःखी हैं बरोबर ; क्योंकि इस समय में ..सभी जड़जड़ीभूत अवस्था को पाए हुए हैं। विनाश तो होने का ही है। सब तैयारियाँ हो रही हैं। कोई नई बात तो हुई नहीं ; क्योंकि ये कलहयुग पुरानी दुनिया, उसके बाद नई दुनिया आनी है ज़रूर और नई दुनिया में राज्य है ही देवी–देवताओं का। तो बाप आते हैं, आ करके ब्रह्मा द्वारा देवी–देवता धर्म की स्थापना करते हैं। देखते आते हैं, भई ये विष्णुपुरी स्थापन कर रहे हैं ब्रह्मा द्वारा। तो जो–2 पुरुषार्थ करते हैं, जैसा–2 पुरुषार्थ करते हैं, वो विष्णुपुरी में आ करके अपना अच्छे पुरुषार्थ का प्रालब्ध पाते हैं। अभी ये समझने की तो बहुत ही अच्छी–2 बातें हैं। तो इस समय में तुम बच्चों को बड़ी खुशी होनी चाहिए। खुशी काहे की है? कि इस समय में हम ईश्वर से भविष्य 21 जन्म का वर्सा पा रहे हैं। अभी जितना तुम पुरुषार्थ करेंगे, जितना अपन को एक्युरेट बनाएँगे...। वो घड़ियाँ भी होती हैं ना। एक होती है लीवर, दूसरी होती है, क्या कहते हैं? सिलेण्डर। तो वो एक्युरेट होती है। वो इतनी एक्युरेट नहीं होती है। ये बच्चे भी ऐसे हैं। देखो, उनमें कई बच्चे तो बहुत एक्युरेट जाते हैं, कई इनएक्युरेट होते हैं। तो फिर उनकी वैल्यू कम हो जाती है। उनको पद भी कम मिलता है। जो लीवर अच्छा चढ़ता है उनको अच्छा पद मिलता है। तो लीवर बनना चाहिए ना। अच्छा चलना चाहिए, एक्युरेट चलना चाहिए पुरुषार्थ कर–करके।.. अभी सब एक्युरेट नहीं चल सकेंगे। ये तो बाबा ने शुरुआत में ही समझाया था ये आपस में लूण–पानी यहाँ–वहाँ होते रहेंगे। वो भले कई तो अच्छी तरह से एक/दो का खाना खराब भी करते होंगे। वो भी समझ में आता है। ऐसे नहीं कि नहीं देखने में आता है। समझ में आता है, जो किसका खाना आबाद न करते होंगे तो खराब ज़रूर करते होंगे; क्योंकि ज्ञान पूरा नहीं, योग नहीं। तकदीर में नहीं, ऐसे भी कहा जाता है; क्योंकि तदबीर कराने वाला तो आता है बरोबर ; परन्तु देखा जाता है कि तदबीर कराने वाला एक ही है। तकदीर बनाने वाले पुरुषार्थ में कमज़ोर होते हैं; इसलिए प्रालब्ध कम पाते हैं। बाकी बाप आते हैं तो पुरुषार्थ तो सबको एक जैसा कराते हैं ना। फिर वो श्रीमत पर न चलने के कारण, आसुरी गुण न खतम करने के कारण, योग में पूरा न...। ये सब योग की बात है। अगर योग में अच्छी तरह से रहें तो धारणा भी अच्छी हो और बहुतों को तीर भी लगे; क्योंकि जिसका योग अच्छा होगा उनका तीर अच्छा लगेगा। योग न होगा, ज्ञान होगा तो उनको इतना पूरा तीर नहीं लगेगा; क्योंकि वो जैसे पण्डित बन जाते हैं। पण्डित को तो आजकल हम कहते हैं, वो आसुरी पण्डित हैं ना। वो तो दुर्गति को प्राप्त कराते हैं ना। तो उनसे भले कुछ अच्छा ही है; परन्तु योग ही बच्चों का दिखाई देता है (कि) कम है। इसलिए शिवबाबा की तरफ इतना लव नहीं है। लव होवे तो उनकी सर्विस करे; परन्तु लव न होने कारण, योग में न होने कारण फिर धारणा भी कम होती है और एक्टीविटी भी सुधरती नहीं है। सर्विस में नहीं लगते हैं, खुशी भी नहीं। जैसे कोई मुर्दे होते हैं ना, उनकी शिकल ही जैसे मुर्दों की; क्योंकि तुम्हारे फीचर्स आकर के देवताओं जैसे सदैव हर्षित रहने चाहिए; क्योंकि ये साजन या बाप कहो, मिला हुआ है इतना, जो तुमको 21 जन्म का वर्सा देते हैं। तो तुम बच्चों को.. देखो कोई भी साहूकार के घर में कोई गरीब जाए, तो कितनी खुशी हो जाएगी। वो आखानी होती है ना। जब साहूकार कोई गरीब के बच्चे को एडॉप्ट करते हैं ना तो उनको कितनी खुशी होती है। तो देखो, तुम भी अभी ये आसुरी सम्प्रदाय के थे, बहुत गरीब। अभी बाप ने आकर अपनी गोद में लिया, एडॉप्ट किया है तुम बच्चों को। तुम बच्चों को तो बहुत

खुशी होनी चाहिए (कि) वाह! कहाँ वो आसुरी सम्प्रदाय के थे, कहाँ अभी ईश्वरीय सम्प्रदाय के बने हो! तुम बच्चों को खुशी तो अपार होनी चाहिए ना; परन्तु अगर किसकी तकदीर में नहीं है। जैसे वो आखानी सुनाते हैं ना– राजा जा करके खेरूद की लड़की ले आया। तो वो मुट्ठी में अकल ही नहीं था। मुट्ठी को शृंगार कराया तो शृंगार ही न करे। है ना यहाँ की बात ; क्योंकि आसुरी सम्प्रदाय के माना ही एक पाई–पैसे वाले के। आते तो हैं बरोबर पटरानी बनने के लिए; जैसे शास्त्रों में है; परन्तु लायकी न होगी तो फिर उनको क्या कहेंगे! तो देखो, कई वापस जा करके फिर वो चले जाते हैं। उस आसुरी सम्प्रदाय में भी जाते हैं वा यहाँ अच्छी तरह से शृंगार न होने के कारण पद भी भ्रष्ट होता है, प्रजा में चले जाते हैं। पटरानी तो बनती नहीं है। नहीं तो बाप तो आते हैं पटरानी बनाने। जैसे कृष्ण के लिए कहते हैं कि भई भगाते थे पटरानी बनाने के लिए। तो ये भगाते कहाँ से हैं? अरे, यह रावण की राजधानी से भगाते हैं, और क्या करते हैं? राम के राज्य में ले आते हैं। भगाना–सगाना ये जो सब लिखा है वो अयथार्थ, तुक्का लिखा हुआ है। इसको अंग्रेजी में कहा जाता है कॉटनबुल स्टोरीज। फालतू गपोड़े। ये गपोड़े हैं ना। जैसे ईश्वर सर्वव्यापी है ये गंदे गपोड़े, पीछे गीता का भगवान कृष्ण है, दूसरे गंदे गपोड़े। तो देखो, ये गपोड़ीशंख होते हैं। इनको कोई शंख नहीं मिला हुआ है। शंख तो तुमको मिलता है। देखो ईश्वरीय जो विष्णु है उनको शंख मिला है। वो शास्त्रों में तो सब गपोड़े हैं। ईश्वर की आसुरी मत पर ये गपोड़े और वो भी शंखध्वनी करते तो हैं ना। ये शंखध्वनी करे– ईश्वर सर्वव्यापी है। देखो, ये भी शंखध्वनी है ना! ये गपोड़े। तुम कहते हो– नहीं, ईश्वर सबका बाप है, उनसे वर्सा मिल रहा है। तुम्हारा है राइटियस गपोड़ा और बाकी शास्त्रों में हैं अनराइटियस गपोड़े। तो बाप बैठकर युक्ति से ये सभी प्वाइंट्स बुद्धि में धारण कराते हैं कि किसको भी तुम समझा सकते हो कि देखो, ब्रह्माकुमार और कुमारियाँ, सो तो प्रजापिता ब्रह्मा की संतान हुए और प्रजापिता ब्रह्मा का बाप तो शिव है; क्योंकि ब्रह्मा,विष्णु,शंकर– ये तीनों हैं शिव बाप के बच्चे। उनको कहा ही जाता है त्रिमूर्ति शिव। कोई त्रिमूर्ति ब्रह्मा नहीं, त्रिमूर्ति शिव। त्रिमूर्ति शिव ब्रह्मा द्वारा ये भारत को फिर स्वर्ग बनाते हैं। जो भारत नर्क है उनको स्वर्ग बनाते हैं। शंकर द्वारा इस भारत को, नर्क को फिर विनाश कराते हैं। विनाश कराते हैं तो सबका विनाश हो जाता है। समझा ना। फिर जो यहाँ बचते हैं सो भी तो भारत में ही बचते हैं। कभी भी प्रलय तो होती नहीं है। तो देखो, ये भी जैसे प्रलय हो जाती है ना। कितने साढ़े पाँच सौ करोड़ हैं और कहाँ देखो थोड़े मनुष्य होंगे! तो बाकी क्या होंगे! यहाँ रात–दिन का फर्क है ना। तो ये भी जब किसको समझावें कि जब इनका राज्य था, तब कुछ ख्याल करो– कितने मनुष्य होंगे सतयुग में। बाकी जो इतने साढ़े पाँच सौ करोड़, वो कहाँ गए? तो ज़रूर वो मुक्तिधाम में गए होंगे। किसने ये खेल ऐसा रचाया जो आ करके...? वही तो पतित–पावन गॉड फादर का ही काम है। आ करके स्थापना करते हैं और बाकी विनाश कर देते हैं और मुक्तिधाम में चले जाते हैं। तो समझना भी सहज आता है। समझाना वो ज़रा...। योग पूरा न होने (के) कारण। योग भटकता है ना। एक तो बाप कहते हैं कि देही–अभिमानी बनो। तो तुम्हारा ये सभी जो देह साथ संबंध है, मिट जावे। नहीं तो क्या याद आते रहेंगे? यही पुराने संबंध के मामा,मासी,चाचा,काकी। भले उनको छोड़ा भी है, यहाँ भी आकर बैठे हैं, तो भी वो उनमें बुद्धि जाती है। बुद्धि जाती है तो बाप कहेंगे– वाह! हमारा बन करके भी, फिर भी नष्टोमोहा नहीं होते हैं, फिर भी अपने मित्र–संबंधी फलाने को याद करते रहते हैं। तो फिर वो हमारे कैसे बने? उसको कहा जाता है व्यभिचारी याद। बाप कहते हैं याद करना चाहिए सिर्फ मुझे और याद करते हैं अपने मित्र–संबंधियों को वहाँ। इसको भी कहा जाता है व्यभिचारी याद होने के कारण वो इतनी सद्गति को नहीं पा सकते हैं; क्योंकि दुर्गति वालों को याद करते हैं। बाप कहते हैं दुर्गति वालों को याद न करो। भले रहे पड़े हो वहाँ ; परन्तु उनमें इतना याद न करो; क्योंकि तुम कहते हो ना कि हम बाप का आपका हो गए, बस। फिर बाहर को ऐसे ही जैसे कि साक्षी हो करके देखते हो कि हाँ, ये जो देखते हैं, ये तो सभी मृत्यु को

पाएँगे। ये तो आसुरी दुनिया है, इनको देखकर क्या करना है! बुद्धि में ये तो ज्ञान हुआ ना। ....वहाँ कमल फूल के समान रहते हुए... वो बहादुर है। यहाँ रहते हुए भी अगर फिर कोई उसको याद करे तो देखो कितना दुर्गति को और जास्ती प्राप्त उसको समझेंगे। वो फिर भी गृहस्थ व्यवहार में रह करके पुरुषार्थ करते हैं कि मैं सिर्फ बाबा को याद करूँ। वो छूट करके, वहाँ से आ करके फिर भी अगर गृहस्थ व्यवहार वालों को याद करे तो देखो कितनी उनकी दुर्गति होती होगी; क्योंकि इंजाम किया ना– हम आपका ही हैं, दूसरा न कोई। फिर अगर यहाँ रहते हुए भी मित्र–संबंधियों का सिमरनी होगा तो फिर उनकी क्या गति होगी! तो फिर कहा जाता है कि इन बिचारे की तकदीर में नहीं है। बाप तो बहुत ही तदबीर कराते हैं; परन्तु नहीं, तकदीर में नहीं है तो समझा जाता है कि भई, ये कोई इतना पद नहीं पा सकेंगे। अगर जास्ती खैंच उस तरफ की हो गई तो शायद चला भी जाएगा। ऐसे होता है ना। अच्छा चलो! टोली नहीं ले आई। आज क्या है? ...ये समझ में आता है कि भारत फैमिली थी; क्योंकि बाप से वर्सा लिया था। ज़रूर उनसे वर्सा लिया होगा संगमयुगे। तो फैमिली थी तो बाप से वर्सा लिया। अभी बन गए हैं आसुरी फैमिली और वर्सा गुम गया है। अभी आसुरी फैमिली का भी मुद्दा आ करके पूरा हुआ है। कलहयुग का अंत। तो फिर ये ईश्वरीय फैमिली का बनने से, ईश्वर तो आता ही है यहाँ और तुम लिखते भी हो– 30वीं जयन्ती। तो ज़रूर... परन्तु पत्थर बुद्धि होने कारण इनके प्रश्न भी नहीं उठते हैं। .....शिव यहाँ आया....आगे आया होगा। तो जरूर आ करके स्थापना की होगी तो टाइम लगा होगा ना। ऐसे थोड़े ही है कि छू–मन्तर करके चला गया होगा। ये सहज राजयोग सिखलाया होगा तो टाइम लगा हुआ होगा ना। ज़रूर आगे भी आया होगा, टाइम लगा होगा। यहाँ भी आया हुआ है तो टाइम लगेगा यानी आया हुआ था और ज़रूर पतितों को पावन अर्थात् ये स्थापना और विनाश करके गया। तो अभी फिर आए हुए हैं। घोर अंधेरी रात है, कलहयुग का अंत है। तो... ठहरती है। सो तो ज़रूर आकर रहा होगा। उनको ये मालूम तो नहीं है ना कि कोई गीता का ज्ञान वो देते थे। इसलिए उनकी कोई भी पता नहीं है एकदम। अगर कृष्ण के लिए लिखता होगा तो ज़रूर कृष्ण भी तो रहा होगा ये संगमयुग पर। अभी कृष्ण संगमयुग में तो होते ही नहीं हैं। हाँ, देखो ऐसे होता है कि बरोबर कृष्ण की आत्मा में विराजमान है परमपिता परमात्मा, जो कृष्ण की आत्मा फिर से वो बन रही है। गोया कृष्ण की राजधानी के वा सूर्यवंशी राजधानी के फिर से राज्य ले रहे हैं। तो फर्क हो गया ना जरा का। यानी है बरोबर कृष्ण की आत्मा के बहुत जन्म के अंत जन्म का भी अंत। इसमें आ करके प्रवेश करे, फिर देखो वो कृष्ण बन रहा है। तुम भी वही फैमिली बन रहे हो। फर्क देखो कितना है! बिल्कुल जरा पाई–पैसे का फर्क है और कोई को भी समझ में नहीं आता है। कृष्ण में मूँझ गए हैं। शिव आया, क्या किया, वो भूल गए यानी ड्रामानुसार पकड़ लिया कृष्ण को। क्या का क्या कहने लगे। ....ईश्वरीय रूहानी सेन्टर के निवासी, मीठे–2 सिकीलधे बच्चे। वहाँ कौन हैं? छुग्गू है और विमल है और नलिनी भी पहुँची होगी और कौन है? सुधा होगी। क्या सभी वहाँ हैं? (किसी बहन ने कहा– विमला आगरे में है) विमला आगरे में है। अच्छा, और जो भी सिकीलधे बच्चे पुरुषार्थ करते हैं बाप से भविष्य 21 जन्म का वर्सा लेने, ऐसे पुरुषार्थी बच्चों प्रति बापदादा का यादप्यार और गुडमॉर्निंग। ये आ रहे हैं। ....भेजी थी भेज देने के लिए। तो बच्चों को भेज रहे हैं। पहले भी भेजने का ख्याल था। तो अभी यहाँ ही तो आ रहे हैं। वो बहुत अच्छी सर्विस करने वाले हैं और पूरी सम्भाल भी करने वाले हैं। तुम बेफिकर होकर आगरे में भी जा सकते हो और जब चाहो उतना यहाँ भी आ सकते हो। अच्छा, विदाई। हाँ, मीठे–2 बच्चों प्रति यादप्यार और गुडमॉर्निंग।